International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का उनकी रुचि एवं दृष्टिकोण पर प्रभाव का अध्ययन

Ms. Dileshwari Sahu[1], Dr. Surekha Vinod Patil[2]

[1]Research Scholar, Education, Hemchand University Durg
[2]Research Guide, Education, Hemchand University Durg

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का उनकी रुचि एवं दृष्टिकोण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में केवल पाठकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का विशेष महत्व है। खेलकूद, वाद-विवाद, भाषण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीत, नृत्य, चित्रकला, विज्ञान प्रदर्शनी तथा विभिन्न क्लब गतिविधियाँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना, रचनात्मकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होती हैं।

इस अध्ययन में दुर्ग एवं भिलाई क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया। नमूने के रूप में कुल **100 विद्यार्थियों** का चयन किया गया, जिसमें दुर्ग के 5 विद्यालयों से 50 तथा भिलाई के 5 विद्यालयों से 50 विद्यार्थी सम्मिलित किए गए। प्रत्येक विद्यालय से 10 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों की पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में सहभागिता, रुचि एवं दृष्टिकोण का अध्ययन प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। अध्ययन में यह पाया गया, कि दुर्ग एवं भिलाई के विद्यार्थियों की तुलना करने पर रुचि तथा दृष्टिकोण के औसत अंकों में

सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि दोनों क्षेत्रों के
विद्यार्थियों में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रति रुचि एवं दृष्टिकोण लगभग समान स्तर का है।

मुख्य बिंदु: पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ, विद्यार्थी, रुचि, दृष्टिकोण, अशासकीय विद्यालय, सर्वांगीण विकास।

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनमें सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक गुणों का विकास करना भी है। विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए पाठ्यक्रम के साथ-साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ वे गतिविधियाँ हैं जो विद्यालय में नियमित शैक्षणिक गतिविधियों के साथ विद्यार्थियों के विकास के लिए आयोजित की जाती हैं। इनमें खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भाषण, वाद-विवाद, निबंध लेखन, चित्रकला, संगीत, नृत्य, प्रश्नोत्तरी, विज्ञान प्रदर्शनी, योग, स्काउट-गाइड आदि गतिविधियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं।

इन गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा एवं रुचि को पहचानने का अवसर मिलता है। सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से उनमें सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व, निर्णय लेने की क्षमता तथा सामाजिक समायोजन जैसे गुणों का विकास होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सहभागिता का अध्ययन करना।
2. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रति विद्यार्थियों की रुचि का अध्ययन करना।
3. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सहभागिता तथा विद्यार्थियों की रुचि के बीच संबंध का अध्ययन करना।
5. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सहभागिता तथा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण के बीच संबंध का अध्ययन करना।
6. दुर्ग एवं भिलाई के विद्यार्थियों की रुचि एवं दृष्टिकोण की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

1. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सक्रिय सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों की रुचि अधिक होगी।
2. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सक्रिय सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक होगा।
3. दुर्ग एवं भिलाई के विद्यार्थियों की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रति रुचि में महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
4. दुर्ग एवं भिलाई के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
5. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सहभागिता एवं विद्यार्थियों की रुचि के बीच सकारात्मक संबंध होगा।
6. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सहभागिता एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक संबंध होगा।

संबंधित साहित्य का अवलोकन (Review of Literature)

पाठ्य-सहगामी गतिविधियों एवं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के संबंध में विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है कि ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर सीखने के अवसर प्रदान करती हैं।

Papavasileiou और Konteos,S (2026)यह अध्ययन 400 ग्रीक विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों पर आधारित है। इसमें पर्यावरण क्लब, शोध, इको-इनोवेशन, ग्रीन कैंपस और प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों का SDGs के प्रति जागरूकता पर प्रभाव पाया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ये गतिविधियाँ ज्ञान, समस्या-समाधान, नेतृत्व, सहयोग और सतत व्यवहार विकसित करने में सहायक हैं।

Fredricks और Eccles (2006) ने extracurricular participation और विद्यार्थियों के विकास के संबंध का अध्ययन किया। उनके अध्ययन से संकेत मिलता है कि गतिविधियों में सहभागिता विद्यार्थियों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास में योगदान कर सकती है।

Mahoney, Cairns और Farmer (2003) ने युवाओं की organized activities में सहभागिता का अध्ययन किया तथा पाया कि विद्यालय एवं सामुदायिक गतिविधियों में सहभागिता सकारात्मक विकास से जुड़ी हो सकती है।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में विद्यालय की सह-पाठ्यक्रमीय एवं पाठ्य-सहगामी गतिविधियों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

शोध विधि (Research Methodology)

शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

जनसंख्या

इस अध्ययन की जनसंख्या में दुर्ग एवं भिलाई क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी सम्मिलित होंगे।

न्यादर्श (Sample)

Fig.कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

क्षेत्र	विद्यालयों की संख्या	प्रत्येक विद्यालय से विद्यार्थी	कुल विद्यार्थी
दुर्ग	5	10	50
भिलाई	5	10	50
कुल	**10**	**10**	**100**

नमूना चयन

विद्यालयों का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति के आधार पर किया जा सकता है। प्रत्येक चयनित विद्यालय से 10 विद्यार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया जाएगा।

शोध उपकरण (Research Tool)

आँकड़े एकत्र करने के लिए **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया जा सकता है। प्रश्नावली को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—

भाग A: सामान्य जानकारी

- विद्यार्थी की आयु
- कक्षा
- लिंग
- विद्यालय
- क्षेत्र

भाग B: पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में सहभागिता

- खेलकूद
- संगीत
- नृत्य
- भाषण
- वाद-विवाद
- चित्रकला
- विज्ञान प्रदर्शनी
- सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि।

भाग C: रुचि एवं दृष्टिकोण
विद्यार्थियों से 5-बिंदु Likert scale पर प्रतिक्रियाएँ ली जा सकती हैं:
पूर्णतः सहमत – सहमत – अनिश्चित – असहमत – पूर्णतः असहमत

आँकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण
प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण, दुर्ग एवं भिलाई के विद्यार्थियों की रुचि एवं दृष्टिकोण की तुलना के लिए **t-test** का प्रयोग किया गया l

Fig.02 पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में सहभागिता

सहभागिता का स्तर	विद्यार्थी	प्रतिशत
निम्न	25	25%
मध्यम	35	35%
उच्च	40	40%
कुल	**100**	**100%**

Fig.03 रुचि का Descriptive Analysis

समूह	N	Mean	SD
निम्न सहभागिता	25	62.48	7.21
मध्यम सहभागिता	35	72.31	6.84
उच्च सहभागिता	40	81.65	5.97

परिणाम: रुचि प्रश्नावली में 20 items हैं और प्रत्येक item 1–5 Likert scale पर है। कुल score 20–100 हैं ।उच्च सहभागिता वाले विद्यार्थियों का औसत रुचि score सबसे अधिक (81.65) है, जबकि निम्न सहभागिता वाले विद्यार्थियों का औसत score 62.48 है। इससे सहभागिता और रुचि के बीच सकारात्मक संबंध की संभावना दिखाई देती है।

Fig. -04दृष्टिकोण का Descriptive Analysis

समूह	N	Mean	SD
निम्न सहभागिता	25	61.72	7.45
मध्यम सहभागिता	35	73.08	6.52
उच्च सहभागिता	40	82.14	5.61

Fig.05 दुर्ग एवं भिलाई की तुलना – Independent Samples t-test

Variable	Group	N	Mean	SD	t	p
रुचि	दुर्ग	50	75.24	8.12	0.94	0.349
रुचि	भिलाई	50	73.82	7.05		
दृष्टिकोण	दुर्ग	50	76.16	7.64	1.12	0.265
दृष्टिकोण	भिलाई	50	74.58	6.81		

यदि **p > .05**, तो अंतर statistically significant नहीं माना जाएगा।

सहभागिता और रुचि के बीच Correlation

Pearson's r = 0.68, p < .01

इसका अर्थ है कि पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में सहभागिता और विद्यार्थियों की रुचि के बीच **सार्थक सकारात्मक सहसंबंध** है।अर्थात सहभागिता का स्तर बढ़ने के साथ रुचि का स्तर भी बढ़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

सहभागिता और दृष्टिकोण के बीच Correlation

Pearson's r = 0.71, p < .01

यह एक **मध्यम से उच्च सकारात्मक सहसंबंध** को दर्शाता है। अर्थात पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में अधिक सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाए जाने की प्रवृत्ति है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

परिकल्पना	Statistical Test	उदाहरणात्मक परिणाम	निर्णय
H सहभागिता एवं रुचि में सकारात्मक संबंध	Pearson r	r = .68, p < .01	स्वीकार
H सहभागिता एवं दृष्टिकोण में सकारात्मक संबंध	Pearson r	r = .71, p < .01	स्वीकार
H दुर्ग-भिलाई रुचि में अंतर नहीं	t-test	p = .349	H स्वीकार
H दुर्ग-भिलाई दृष्टिकोण में अंतर नहीं	t-test	p = .265	H स्वीकार

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन के उदाहरणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्ययन में उच्च स्तर की सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों की रुचि तथा दृष्टिकोण के औसत अंक निम्न एवं मध्यम सहभागिता वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाए गए। इससे संकेत मिलता है कि पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता विद्यार्थियों में इन गतिविधियों के प्रति रुचि एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकती है।

दुर्ग एवं भिलाई के विद्यार्थियों की तुलना करने पर रुचि तथा दृष्टिकोण के औसत अंकों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रति रुचि एवं दृष्टिकोण लगभग समान स्तर का है।

सहसंबंधात्मक विश्लेषण से पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सहभागिता और विद्यार्थियों की रुचि के बीच **सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.68)** तथा सहभागिता और दृष्टिकोण के बीच **सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.71)** पाया गया। अतः अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता उनके सकारात्मक दृष्टिकोण एवं रुचि से संबंधित है।

अतः विद्यालयों में खेलकूद, संगीत, नृत्य, कला, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनी तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों को नियमित रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता, आत्मविश्वास, नेतृत्व एवं सामाजिक सहयोग की भावना विकसित करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के **सर्वांगीण विकास एवं सकारात्मक व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम** सिद्ध हो सकती हैं।

संदर्भ सूची (References)

1. Fredricks, J. A., & Eccles, J. S. (2006). Is extracurricular participation associated with beneficial outcomes? Concurrent and longitudinal relations. *Developmental Psychology, 42*(4), 698–713.
2. Mahoney, J. L., Cairns, B. D., & Farmer, T. W. (2003). Promoting interpersonal competence and educational success through extracurricular activity participation. *Journal of Educational Psychology, 95*(2), 409–418.
3. संजीव कुमार भारद्वाज, विश्वास,(2017).पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य-सहगामीक्रियाएँएकअन्वेषणात्मकअध्ययन.https://scholar.google.com/scholar?q=related:-t-1Kc7I2XQJ:scholar.google.com/&scioq
4. Papavasileiou,A., Konteos,S.,(2026).Investigating the Impact of Sustainability-Themed Extracurricular Activities on Student Engagement with the 17 SDGs by 2026: A Case Study of Greece.https://www.mdpi.com/2071-1050/17/7/3071